

## संक्षिप्त भावार्थ\_दासबोधामृत : अध्याय ५ : " गुण, रूप, जगज्ज्योति "

ॐ अथ श्रीसमर्थ\_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "संक्षिप्त भावार्थ\_दासबोधामृत"सारे

" गुण, रूप, जगज्ज्योति " नाम पञ्चमोऽध्यायः

(मूळ दासबोध दशक ९ : " गुण, रूप" )

ॐ श्री गणेशाय नमः |

श्रीराम जय राम जय जय राम | जय जय रघुवीर समर्थ !

निराकार म्हणजे आकारच नाही | निष्कलन्क म्हणजे कलन्कच नाही | अगणित म्हणजे गणना शक्य नाही | ही उदाहरणे काही 'दैवी' वा 'ईश्वरी' गुणांची (५.१)

जे का 'नित्य व निरन्तर' | तेच भगवन्ताचे "निज\_स्वरूप" | म्हणोनि दृष्टीस जे जसे दिसतसे 'दृष्य' | ते ईश्वरी 'निजस्वरूप' निष्चितच नाही (५.२) [९.१.१\_८]

शब्दात ते स्वरूप अवर्णनीय | म्हणोनिच श्रुति 'नेति\_नेति' म्हणत | केवळ बुद्धीसच 'ज्ञानगम्य' | निज\_स्वरूप ते परमेश्वराचे (५.३) [९.२.३५\_४०]

स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण | असे हे सजीव देहान्चे चार प्रकार | पिण्डी, ब्रह्माण्डी त्यासी ओळखून | सिद्ध, सन्त ज्ञानी धन्य होती (५.४) [९.५.२\_५]

पोहणे नेणे तो बुडे | पोहणे जो जाणे तो तरे | तैसेच जो जो स्व\_बन्धनात्रा जाणे | तोच पावू शके 'मुक्ति' त्यापासुनी (५.५) [९.७.३५\_३६]

म्हणोनिया 'आत्मज्ञान' मार्गे | जाणोनि, पाळावी वा तोडावी बन्धने | पुण्य\_सुख\_कारक बन्धने सर्व 'जोडणे' | त्यापासोनि 'मुक्ता' न कल्पावी कधीही (५.६) [९.७.३९\_४५]

'सुखांचे'ही असती तीन प्रकार | 'सात्त्विक' सुखे जोडावी जी पुण्य सम्पादक | 'राजसिक' व 'तामसिक' सुखे 'पाप' कारक | 'मुक्ति' त्यापासोनि मिळवणे योग्य (५.७)

दुःखदायक व 'पाप'संचय कारक | त्या सर्वांचे क्षालन करावयास | 'मुक्ति' त्यापासोनि मिळवण्यास | ज्ञानानेच सापडती योग्यसे मार्ग (५.८)

ज्ञान मेन्दूंच्या स्मृतीग्रन्थीन्तुनी | ठेविले जाते याची येते प्रचीती | परन्तु मग का वृद्धापकाळी | विस्मृती वा स्मृतीभ्रंश होतो अनेकात्रा ? (५.९)

दुसरीकडे लहानपणी | पूर्वजन्मातीलही थोड्याशा 'आठवणी' | अनेक मुले सांगती याचीही | नोन्द जगभरही झालेली आहे (५.१०)

विदेही\_जीवात्मा मृत्यू नन्तरही | कैशी नेतो\_आठवतो मृत\_मेन्दूतली स्मृती ? | या विषयावर संशोधने सखोलशी | होतील तेंव्हा कळू शकेल काहीसे (५.११)

मानवांनी मेळवुनी योग्य बी बियाणे | शेती, मळे पिकवुनी 'पीक' काढले नवे | परन्तू मुळात 'बीज' ज्याने बनवले | तो नि त्याचा मेन्दू दोन्हीही अदृश्य (५.१२)

त्या अदृश्य अशा ईश्वरी शक्तीमध्ये | ज्या प्रमाणे 'ज्ञान' व 'स्मृती' निवसते | जीवात्म्यातही त्याचप्रमाणे | निवसणे अगदी शक्य आहे (५.१३)

विवेके तुटे 'अनुमान' | विवेकेच होते 'समाधान' | विवेके साधता 'आत्म-निवेदन' | सन्देहा पासोनि लाभेल 'मुक्ती' (५.१४) [९.९.३९\_४१]

देउळी गाभारी वसे जगन्नायक | परी शिखरावरी बैसतसे 'काक' | म्हणोनिया 'काक'च देवाहूनही 'श्रेष्ठ' | ऐशिया कुतर्कास मानावे कैसे ? (५.१५) [९.१०.१\_२]

ऐसे कुतर्क व वितण्डवाद | यांच्यापासोनि मिळवावा 'मोक्ष' | चांगले व कष्टाने मिळवलेले 'ज्ञान' | त्यापासोनि मुक्तता 'मौख्य' जाणा (५.१६)

जेणे जया देवास भजावे | तेणे त्याचाच 'लोक' पावणे | म्हणोनि मोक्षाच्या कान्क्षियाने | भजावे निर्गुण परब्रह्मासी (५.१७)

[९.१०.११\_२०]

निर्गुण\_उपासनांचीही अनन्त | साधने, मार्ग वर्णित उपनिषदांत | "अष्टांग\_योग" म्हणुनी सुप्रसिद्ध | तो मार्ग घरबसल्या सुगम व सोपा (५.१८)

यम, नियम, आसन, प्राणायाम | प्रत्याहार, धारणा, ध्यान | समाधी ही अष्ट अंगे जयास | तो मार्ग मोक्षाचा राजमार्ग (५.१९)

## (मूळ दासबोध दशक १० : "जगज्योति " )

कुत्रा, गाय, बैल, मर्कट, मुंगी | ऐशी नावे जरी दिधली मानवात्री | या नावाविनाच त्या त्या प्राण्यासी | "मी कोणता प्राणी ?" ते माहीत आहे (५.२०) [१०.१.१७\_२०]

सर्वासच या जाणीवेचे ज्ञान | परमेश्वरानेच केले उत्पन्न | प्रत्येक सजीवाचे 'अन्तःकरण' | या 'अहंकारा'ने परिपूर्ण आहे (५.२१)

'मी अमुक प्रकारची श्वेत\_रक्तपेशी' | "मम जीवन कार्य व हेतु काय" ही | सर्वही माहिती ज्या ठायी वसे ती | जागाच

'अन्तःकरण\_आकाश' जाणावे (५.२३)

चर्मचक्षूंस अदृश्य इतक्या लहान | रक्त, चर्म पेशी मधेही हे ज्ञान | कुणीही न शिकवताच होते उत्पन्न | ही समानता या अन्तःकरणांची (५.२३)

परी प्रत्येक देहाच्या गुणधर्मानुसार | मी 'कुत्रा' वा 'मी\_पेशी' ऐसे विभिन्न | ज्ञान नैसर्गिकच होते उत्पन्न | बाल, तरुण, स्त्री\_पुरुष आदिकत्वाचेही (५.२४)

'अन्तःकरणा'मधिल हा देहाभिमान | स्व\_'स्थिति'च्या ज्ञानाचा हा अनुभव विलक्षण | म्हणोनिया तो 'विष्णु'\_तत्वाचाच अंश | मानिला वैदिक ऋषी गणान्नी (५.२५) [१०.१.२६\_३१]

हजारो प्रकारच्या अब्जावधी पेशी | सर्वही सजीव अशा देहातच निवसती | परन्तु त्यांच्या आत्मा\_अनात्मा अस्तित्वांचीही | जाणीव मुळिचही मुख्य जीवात्म्यास नाही (५.२६)

रक्त\_पेशी, मांस\_पेशी | चर्म\_पेशी, जीभ\_पेशी | हृदय\_पेशी, फुफ्फुस\_पेशी | ऐसे हजारो प्रकार त्या जीवात्म्यांचे (५.२७)

जास्तीत जास्त वा कमीत कमी | दोन्हीन्नाही 'तम' हा प्रत्यय उपयोजिती | लघुतम, दीर्घतम उदाहरणार्थी | अतिशयोक्ती हाच 'तमोगुण' जाणावा (५.२८)

अनेक बाबतीत पूर्ण 'नेणिव' वा अज्ञान | त्यासच मानिले तमोगुणी\_शिवांश | काही बाबतीतील संमिश्र 'जाणीव\_नेणिवेस' |

रजोगुणांश ब्रह्म्याचा कल्पिलासे (५.२९)

निद्रा\_प्रलय, मृत्यु\_प्रलय | चतुर्युगान्त\_प्रलय, कल्पान्त\_प्रलय | पाचवा तो ब्रह्माण्ड ब्रह्म\_प्रलय | ऐसे पञ्च\_प्रलय जाणून घ्यावे (५.३०) [१०.५.६\_२९]

हे सर्व प्रलय स्थूल 'सृष्टी'तले | सूक्ष्मातही विवेक, वैराग्यादिके | नाना प्रलय स्वभावातले | आयु, लिङ्ग, परिस्थिती अनुरूप घडती (५.३१)

भ्रमेण अहम्, भ्रमेण त्वम् भ्रमेण उपासका जनाः | भ्रमेण ईश्वर\_भावत्वम् भ्रम\_मूलम् इदम् जगत् (५.३२) [१०.६.११\_१३]

मी अमुक\_तमुक हा गर्व\_अहंकार भ्रम | मला, तुला, त्याला बहुतेक सर्वासच | बाधतो बान्धतो नाना क्रिया\_कर्मास | मिळवावी हो मुक्ती त्यापासोनी (५.३३)

यज्ञे, दाने, होमादिक कर्मे | पूजा, यात्रा, व्रते, नेमधर्मे | यापासोनि लाभ अमुक तमुक ऐसे | भ्रम त्यागोनि निरपेक्ष धरावी वृत्ती (५.३४)

शकुन, अपशकुनांचे आडवे मांजर | मद्यादिक सेवनाने आभास दुष्कर | खोट्या वार्ता वा अफवांचा कहर | ऐशा भ्रमे नाश अनेकांचा (५.३५) [१०.६.२०\_३२]

"अहम् ब्रह्मास्मि" आदिक महावाक्यांचा | कुतर्के अनर्थ\_कारक अर्थ काढोनिया | स्वतः भ्रमला, वा नाना भोळ्यांना फसविला | हा अनुभव ऐतिहासिक सर्व कालीन (५.३६)

ब्रह्मयाने लिहिले जे का ललाटी | ते सर्व सटवी वाचून दाखवी | ऐशा नाना प्रकारच्या गोष्टी | 'भ्रम' रूप त्यान्ना जाणावे (५.३७) [१०.६.३४\_३५]

निर्गुणाचे ज्ञान झाले व पटले | म्हणुन सगुण भजन ज्याने दुर्लक्षिले | त्यास ज्ञानानेच जणू नागविले | दोहीकडोनी (५.३८) [१०.७.१६]

जो जो साण्डील सगुण भजनासी | तो ज्ञाता असूनही होईल अपयशी | निष्काम बुद्धिने सगुणाराधनेसही | पाळीत जाईल तोच यशस्वी व धन्य (५.३९) [१०.७.१८\_२३]

ऐशिया वेद\_शास्त्रोक्तीस समजून घेउनी | वागतील त्यान्ना देवही 'सद्बुद्धी' | सातत्याने देतच जाई | उत्स्फूर्त स्फूर्ति, विवेकादिक रूपे (५.४०)

ददामि बुद्धि योगम् तम् येन माम् उपयान्ति ते | ऐसे भगवद्गीतेत कृष्णाने सांगितले | बुद्धीच्या योगाने सगुण\_निर्गुण जोडले | एकमेकाशी अनन्य\_भावे (५.४१)

बाह्य व्यावहारिक जीवनी वागता | 'प्रचीती' नन्तरच विश्वास ठेवावा | नाही तर होईल फसवणूक महा | जागोजागी वेळोवेळी (५.४२)

अंकुरेल, उगवेलच हे परीक्षोनी | नन्तरच घ्यावे 'बीज' द्रव्य देउनी | योग्य प्रकारेच ते शेतात पेरुनी | जाणत्यान्नी सदैव पीक पिकवावे (५.४३) [१०.८.४\_९]

'प्रचीती' विना जे पोकळ ज्ञान | तेथे न वसे 'सुख\_समाधान' | कच्च्या वैद्याचे घेतल्यास 'औषध' | धोका प्राणासही असे देखा (५.४४) [१०.८.१६\_१८]

स्वात्म\_प्रचीती अशक्य असे जेथे | तेथे शास्त्रादिक 'प्रमाण'च ग्राह्य धरावे | परन्तू उचित ग्रन्थ\_संस्थांचेच असावे | हे 'प्रमाण\_पत्र' विश्वसनीय (५.४५)

देहास "उत्पत्ती\_स्थिति\_लय" हे त्रिगुण | म्हणोनिया त्यास 'स्त्री' असे सम्बोधुन | जीवात्म्यास 'पुरुष' समानच मानून | वेद\_शास्त्र उपनिषदे वचने वदती (५.४६)

ही "अर्ध\_नारी\_नटेश्वर" उपमा | प्रत्येक सजीवास ग्राह्य मानोनिया | शास्त्रे सांगती क्रिया\_कर्मे नाना | त्यातील मर्म हे जाणती ज्ञानी (५.४७)

'शिव\_शक्ती', 'पुरुष\_प्रकृती' | 'माया\_ब्रह्म' इत्यादिक आध्यात्मिक जोडपी | या सर्व असती तात्विक\_तर्क गोष्टी | नुमगल्यास 'भ्रम' होती नानाविधांचे (५.४८)

म्हणोनिया 'सद्गुरु' करावा योग्यसा | 'सत्संग'ही सत्पात्रता पारखूनच धरावा | स्वबुद्धिनेही 'तत्त्व\_विचार' विवरावा | अन्तर्यामी सर्वही साधकांनी (५.४९) [१०.९.२५\_२८]

शान्ती, क्षमा, विरक्ती, भक्ती | अध्यात्म\_विद्या, 'सहज'\_स्थिति | 'क्षेत्र', 'क्षेत्रज्ञ' इत्यादिक तत्त्वोक्ती | 'क्षर\_अक्षर' ब्रह्म समजून घ्यावे (५.५०) [१०.१०.२८\_५०]

द्वौ इमौ पुरुषौ लोके क्षर, अक्षर एव च | क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थः अक्षर उच्यते (५. ५१) [भगवद्गीता १५.१६]

उत्तमः पुरुषः तु अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः | यो लोकत्रयम् आविश्य बिभर्ति अव्यय ईश्वरः (५.५२) [भगवद्गीता १५.१७] देह तर माझा 'सगुण' आहे | परी मम 'आत्मा' तर निर्गुण आहे | सगुण\_निर्गुण मिश्रित असे हे | व्यक्तिमत्व माझे हे ज्ञानच 'आत्म\_ज्ञान' (५.५३)

परमात्माही तशाच प्रकारे | सगुण\_निर्गुण मिश्रितच सदैवच विलसे | पिण्डी\_ब्रह्माण्डी प्रत्ययास येतसे | हेच ब्रह्म\_ज्ञान स्मरावे सदैव (५.५४)

देह क्षर, आत्मा अक्षर | परमात्मा क्षर\_अक्षर व उत्तम | अशा त्या पुरुषोत्तमाचे स्मरण | करोनिया आराधना करावी त्याची (५.५५)

आत्म\_ज्ञान व ब्रह्म\_ज्ञान | या दोघासही मेळवून | कार्य करिता वाचवून 'शीण' | सिद्धीस जातील ईश्वर आराधना (५.५६) [१०.१०.४५\_६७]

जन्मल्यापासून मृत्यू पर्यन्त | देहबन्धना मधुन मुक्ती अशक्यच | देह तर माझा असणार 'सगुण'च | हे विवेक\_ज्ञान सदैव स्मरणात ठेवावे (५.५७)

सगुण आराधना निर्गुण आराधना | दोन्हीही शास्त्रोक्त तथैव कालोचितही ऐशा | पाळोनिया स्वोन्नतिचा मार्ग चालावा | मनी 'निष्काम्यता' बाळगोनी (५.५८)

इति श्रीसमर्थ\_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "सन्क्षिप्त दासबोधामृत"सारे

**" गुण, रूप, जगज्ज्योति " नाम पञ्चमोऽध्यायः**

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु | जय जय रघुवीर समर्थ !